गद्य खण्ड 3

बाजार दर्शन

लेखक — जैनेन्द्र

पाठ के आधार —

प्रश्न-1- बाजार का जादू चढ़ने और उतरने पर मनुष्य पर क्या-क्या असर पड़ता है?

उत्तर- जब बाजार का जादू चढ़ता है तो मनुष्य अनावश्यक चीजों का संग्रह करने लगता है क्या अधिकाधिक वस्तुओं के संग्रह से मनुष्य समाज में अकेला पड़ने लगता है। इसमें छल-कपट, झूठ आदि बढ़ता जाता है। मनुष्य बाजार के जादू में अपनी विवेक शक्ति खो देता है।

जब जादू उतरता है तो व्यक्ति संयमशील हो जाता है। वह केवल आवश्यकता की वस्तु खरीदने ही बाजार जाता है, चाह और लालसा समाप्त हो जाती है और व्यक्ति शांति से अपना जीवन व्यतीत करने लगता है।

प्रश्न-2- बाजार में भगत जी के व्यक्तित्व का कौन सा सशक्त पहलू उभरकर आता है? क्या आपकी नजर में उनका आचरण समाज में शांति स्थापित करने में मददगार हो सकता है?

उत्तर- भगत जी एक स्वाभिमानी व्यक्ति थे जिन्हें बाजार का आकर्षण, सौंदर्य, बड़ी-बड़ी दुकानें आकर्षित नहीं कर सकीं, ना ही उनके स्वाभिमान को डिगा सकीं। वे आत्मसंयमी और मितव्ययी व्यक्ति थे केवल आवश्यकता की वस्तुएँ ही खरीदते थे।

हाँ, हमारी नजर में उनका आचरण

समाज में शांति स्थापित करने में मददगार हो सकता है। अगर जो की तरह यदि समाज के लोग भी बाजार के आकर्षण को देखकर मोहित न हो और संयम, स्वाभिमान और मितव्ययता से वस्तुएँ खरीदें, तो व्यक्ति का मन शांत होगा। वह अपनी इच्छाओं को कम में करके फिजूलखर्ची पर काबू पा सकेगा जिससे उसका जीवन भी शांतिमय हो जाएगा।

प्रश्न-3- 'बाजारूपन' से क्या तात्पर्य है? किस प्रकार के व्यक्ति बाजार को सार्थकता प्रदान करते हैं अथवा बाजार की सार्थकता किसमें है?

उत्तर- 'बाजारूपन' से तात्पर्य है - दिखावे के लिए बाजार का उपयोग करना। जब हम अपनी क्रयशक्ति के गर्व से अपने पैसे से कुछ अनावश्यक और व्यर्थ की चीजें खरीदते हैं तो हम बाजार का बाजारूपन बढ़ाते हैं। इस प्रवृत्ति से न हम बाजार का फायदा उठा पाते हैं और न हम बाजार को वास्तविक लाभ दे पाते हैं।

वे व्यक्ति जो अपनी आवश्यकता समझते हैं, बाजार को सार्थकता प्रदान करते हैं। क्योंकि बाजार का उद्देश्य मनुष्य की जरूरतों को पूरा करना है।

प्रश्न-4- बाजार किसी का लिंग जाति, धर्म या क्षेत्र नहीं देखता; वह देखता है सिर्फ उनकी क्रय शक्ति इस रूप में वह एक प्रकार से सामाजिक समता की भी रचना कर रहा है। आप इससे कहाँ तक सहमत हैं?

उत्तर- हाँ इस कथन से हम सहमत हैं कि बाजार सभी जाति धर्म और लिंग के व्यक्ति आते हैं। वह सिर्फ ग्राहक की क्रय शक्ति देखता है इससे उसे कोई मतलब नहीं कि खरीदने वाला व्यक्ति पुरुष है या स्त्री, मुसलमान है या हिंदू। सभी अपने उपयोग की वस्तु खरीदते हैं। ग्राहक व दुकानदार की कोई जाति, धर्म या लिंग विशेष नहीं होता। बाजार ज्यादा खरीददारी करने वाले ग्राहक को ही महत्व देता है। इसी आधार पर बाजार जाति, धर्म को मिटाकर सामाजिक समरसता की स्थापना करता है।

लेखक के विचारों से मैं पूर्णतः सहमत हूँ।